लो दीवाली आ गई

-डॉ उमेश प्रताप वत्स

हर वर्ष की तरह आज फिर
देखो दीवाली आ गई
थोड़ी फीकी ही सही
फिर भी दीवाली आ गई
धड़ाम-बढ़ाम पटाखों की
पहचान दीवाली आ गई
सजी दुकानें बाजार सभी
चकाचक दीवाली आ गई
दो-दो रोकड़ पाने को जो
संघर्ष में दिवस-रात्रि
वर्षभर की कमाई का सुअवसर
लेकर दीवाली आ गई
जिसने सजाया बारूद को
पटाखों के ही रूप में
उसकी मेहनत का नतीजा
लेकर दीवाली आ गई